Notification No :549/2023

Dated : 16/11/2023)

Name of scholar : Susheel Dwivedi
Name of supervisor : Prof. Chandrdev singh yadav
Department : Hindi
Research topic – Agyey Aur Nirmal Nerma ke Nibandhon men Aalochna ke Maandand

बीज शब्द : आधुनिकता, उत्तर उपनिवेशवाद**,** नई आलोचना, परम्परा, स्वातंत्र्यबोध**,** कलावाद

(findings)

इतिहास, साहित्य, संस्कृति, कला, भाषा सभी मानविकी विषयों के लिए परम्परा का ज्ञान जरूरी है। मानव चेतना, इतिहास, समाज, सत्ता, संस्कृति का मूल्यांकन परम्परा के ज्ञान पर ही निर्भर है । लेखक के लिए यह पुश्तैनी की कोई वस्तु नहीं है, जो स्वतः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होती रहती है; बल्कि इसे प्राप्त करने के लिए उसे बड़ी सजगता से परिश्रम करना पड़ता है। वही लेखक की साधना है, वही उसका अर्जित किया हुआ ज्ञान । अज्ञेय के यहाँ बुद्ध जेन व मानवेन्द्र राय के दर्शनों की अजस्र स्रोत मौजूद है । इसलिए अपने निबंधों, कहानियों, कविताओं और 'अंतःक्रियाओं' में मानसिक विचलन से बच सके । वे कालिदास, कबीरदास, तुलसीदास, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला की परम्परा को विस्तृत अर्थ-सन्दर्भ दे सके । उन्होंने अपने निबंधों का फलक कला, काल, इतिहास, सृजन, आलोचना, समसामयिक विमर्शों तक विस्तृत किया । इसलिए उनके निबंधों में लोक का अनुभव भी है और शास्त्र का भी । उन्होंने इसे अपनी परम्परा से अर्जित किया है और पुत्र की भांति इसे समाज से अंगीकार किया । किन्तु उन्होंने परम्परा और रूढ़ी के प्रचलित अर्थ को स्वीकार नहीं किया ; अपितु रूढ़ि के नकारात्मक बोध पर प्रश्न उठाते हैं । यह तभी संभव है जब रचनाकार ने अपनी परम्परा, समाज को माँ के रूप में देखा हो ।

पाश्चात्य नई समीक्षा के इतिहास, सिद्धांत और नई समीक्षा के प्रमुख आलोचकों का अध्ययन किया गया है। बीसवीं सदी के आरंभ में पुराने प्रतिमानों की अप्रासंगिकता और अपर्याप्तता सिद्ध हो गयी थी।'नई आलोचना' ने इसे गहराई से महसूस किया। इसमें विरोध का स्वर तो था ही, किन्तुउससे भी अधिक यहाँ नये सृजित साहित्य को युग संदर्भानुकुल देखने-परखने की उत्कटलालसा मौलिक रूप से प्रमुख थी। बीसवीं सदी की यह सबसे प्रबल आलोचना-पद्धति थी। नये जीवन-बोध और युग-बोध के चलते परंपरा से भिन्न 'नये सृजन' की आवश्यकता हुई। टी. एस. इलियट, आई ए. रिचड्र्स, जॉनक्रोरैंसम,ऐलनटेट, आर.पी.ब्लैकमूर, क्लींथब्रुक्स, एफ. आर. लीविस आदि की आलोचना सम्बन्धी अवधारणा को शामिल किया गया है।

अज्ञेय और निर्मल वर्मा के निबंधों में परम्परा और निर्वैयक्तिकता, व्यक्ति सत्ता और समाज का द्वंद्व,आत्मान्वेषण और आत्मसाक्षात्कार,सौन्दर्यबोध और शिवत्वबोध है। अज्ञेय ने अपने आलोचनात्मक-चिंतन में 'सौंदर्य-बोध और शिवत्व-बोध' का समर्थन किया है। साथ ही अज्ञेय और निर्मल वर्मा के आलोचनात्मक-चिन्तन में औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक समय का प्रतिपक्ष है।

अज्ञेय और निर्मल वर्मा के चिंतन का क्षेत्र भारतीय संस्कृति से लेकर भूमंडलीकरण के मनुष्य तक फैला है। उनके चिंतनकला, साहित्य औरधर्म के सवालों से लेकर आधुनिक मानव सभ्यता के अंतर्विरोधों तक जुड़ा है। उनकी इसी चिंतन के कारण अशोक वाजपेयी, रमेशचंद्र शाह, नंदकिशोर आचार्य, कृष्णदत्त पालीवाल आदि समीक्षकों ने उन्हें देश के समकालीन बुद्धिजीवियों में गिना है।